E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

रघुवंशम् का महाकाव्यत्व

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

महाकाव्य का स्वरूप जानने के लिए सर्वाधिक सरल और सुन्दर परिभाषा १४वीं शती ई० में उत्पन्न आचार्य विश्वनाथ ने अपने लक्षण-ग्रन्थ साहित्यदर्पण में दी है। उनके कथनानुसार महाकाव्य एक सर्गबद्ध प्रबन्धकाव्य है, जिसमें कि कोई देवता अथवा सद्वंश में उत्पन्न धीरोदात्त गुणों से अन्वित एक या अनेक नरेश नायक होते हैं। महाकाव्य का प्रारम्भ इष्ट-देवता के प्रति नमस्क्रिया, आशीर्वाद अथवा वस्तुनिर्देश से होता है। शृङ्गार, वीर एवं शान्त में से कोई एक रस अङ्गी होता है, शेष अन्यान्य रस अङ्गभूत होते हैं। समस्त नाटकसन्धियाँ इसमें होती हैं। न बहुत छोटे और न बहुत बड़े ऐसे आठ से अधिक सर्ग होते हैं। प्रत्येक सर्ग में एक ही प्रकार के छन्द होते हैं, हाँ! सर्ग के अन्त में छन्दः परिवर्तन हो जाता है। कभी-कभी एक ही सर्ग में अनेक छन्द भी होते हैं। सर्ग के अन्त में भावी सर्ग की कथा सूचित कर दी जाती है। महाकाव्य में यथावसर नगर, सागर, पर्वत, षड्ऋतु, चन्द्रसूर्योदयास्त, वनोपवन, जलविहार, सन्ध्या, प्रातः, रजनी, मधुपान, रतोत्सव, संयोग, वियोग, विवाह, कुमारजन्म, रणप्रयाण, विजय एवं अभ्युदयादि का निबन्धन होना चाहिये। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष में से कोई एक महाकाव्य का फल होता है। इस प्रकार के सल्लक्षणों से अलंकृत महाकाव्य किसी महापुरुष के जीवन का व्यापक चित्र प्रस्तुत करता है-

सर्गबन्धो महाकाव्यस्तत्रैको नायकः सुरः। सद्वंशः क्षत्रियो वापि धीरोदात्तगुणान्वितः।।

एकवंशभवा भूपाः कुलजा बहवोऽपि वा। शृङ्गारवीरशान्तानामेकोऽङ्गी रस इष्यते।।

अङ्गानि सर्वेऽपि रसाः सर्वे नाटकसन्धयः। इतिहासोद्भवं वृत्तमन्यद्वा सज्जनाश्रयम्।।

चत्वारस्तस्य वर्गाः स्युस्तेष्वेकं च फलं भवेत्। आदौ नमस्क्रियाशीर्वा वस्तुनिर्देश एव वा।।

क्वचिन्निन्दा खलादीनां सताञ्च गुणकीर्तनम्। एकवृत्तमयैः पद्यैरवसानेऽन्यवृत्तकैः।।

नातिस्वल्पा नातिदीर्घाः सर्गा अष्टाधिका इह। नानावृत्तमयः क्वापि सर्गः कश्चन दृश्यते।।

सर्गान्ते भाविसर्गस्य कथायाः सूचनं भवेत्। सन्ध्यासूर्येन्दुरजनीप्रदोषध्वान्तवासराः।।

प्रातर्मध्याह्नमृगयाशैलर्तुवनसागराः। सम्भोगविप्रलम्भौ च मुनिस्वर्गपुराध्वराः।।

रणप्रयाणोपयममन्त्रपुत्रोदयादयः। वर्णनीया यथायोगं साङ्गोपाङ्गा अमी इह।।

कवेर्वृत्तस्य वा नाम्ना नायकस्येतरस्य वा। नामास्य सर्गोपादेयकथया सर्गनाम तु ।।

काव्यशास्त्र द्वारा प्रतिपादित लक्षणों के आधार पर परीक्षा करने पर 'रघुवंशम्' में महाकाव्य के प्रायः सभी लक्षण घटित होते हैं। इसकी कथा अत्यन्त प्रख्यात है जो रामायण से ली गई है। यह कथा 19 सर्गों विभक्त है। सबसे छोटे सर्ग अष्टादश में 53 तथा सबसे बड़े द्वादश सर्ग में 104 श्लोक हैं।

इसमें एकवंशोत्पन्न अर्थात् रघुकुल में ही उत्पन्न अनेक राजाओं का क्रमिक वर्णन किया गया है। इसका नाम भी इन्हीं राजाओं में से एक महान् प्रतापी राजा 'रघु' के नाम पर 'रघुवंश' रखा गया है। प्रत्येक सर्ग में एक छन्द का प्रयोग हुआ है। साथ ही अन्तिम दो-एक छन्दों में छन्द-भिन्नता भी विद्यमान है। इसका प्रधान (अङ्गी) रस 'शृंगार' ही कहा जा सकता है। इसमें गौणरूप से करुण, वीर आदि रसों का भी सुन्दर समावेश हुआ है। प्रत्येक सर्ग के अन्त में भावी कथा की सूचना भी सूक्ष्मरूप से दी गयी है।

सर्ग न अधिक छोटे तथा न अधिक विस्तृत ही हैं। महाकाव्य के प्रारम्भ में मंगलाचरण एवं नमस्कारात्मक श्लोक भी विद्यमान हैं, जिनमें शिव-पार्वती की वन्दना की गई है। स्थान-स्थान पर संध्या, सूर्य, चन्द्र, रात्रि, अन्धकार, प्रातःकाल, शिकार, ऋतु, वन, पर्वत, सागर, युद्ध, आक्रमण, विवाह, सन्तानोत्पत्ति आदि का भी आकर्षक एवं मनोहर वर्णन विद्यमान है।

शृंगार सम्बन्धी संयोग अथवा वियोग का भी सुन्दर वर्णन यथास्थान विद्यमान है। चारों पुरुषार्थों से सम्बिन्धित वर्णन भी यथास्थान विद्यमान है। सज्जनों के गुण और दुष्टों की निन्दा का भी यथास्थान वर्णन उपलब्ध होता है।

अतः 'रघुवंश' शास्त्रीय दृष्टि से महाकाव्य की श्रेणी में ही आता है। संस्कृत साहित्य के महाकाव्यों में लघुत्रयी के नाम से प्रसिद्ध ग्रन्थों में 'रघुवंश' का महत्त्वपूर्ण स्थान है।